बेजोड़ कारीगरी की नायाब धरोहर कांच का मंदिर

कानपुर के कमला टावर क्षेत्र में माहेश्वरी मोहाल में स्थित कांच का मंदिर स्थानीय के साथ बाहरी पर्यटकों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र है। श्री धर्मनाथ स्वामी जैन श्वेतांबर मंदिर के नाम से जाना और पहचाना जाने वाला यह दर्शनीय स्थल 155 वर्ष पुराना होने के साथ जैन धर्म का प्रमुख केंद्र है। कांच से बने इस मंदिर को जो भी देखता है, मुग्ध सा रह जाता है। इस मंदिर में कांच की बेजोड़ कारीगरी अकल्पित है। मंदिर में 15 वें तीर्थंकर धर्मनाथ स्वामी और सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं स्थापित हैं। इस मंदिर को कानपुर की ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक धरोहर का दर्जा प्राप्त है।

प्रस्तुतिः मनोज त्रिपाठी

कांच की दीवारों पर राजस्थानी और ईरानी शैली की अद्भुत कला

जैन कांच मंदिर वास्तुकला और स्थापत्य कला का इतिहास बयान करता है। पूरा मंदिर कांच से बना है। इसे आगरा से आए कारीगरों ने तैयार किया था। कांच की दीवारों पर राजस्थानी और ईरानी शैली की अद्भुत कला का संगम दिखाई देता है। दीवारों पर बिहार के सम्मेद शिखर (जहां 20 तीर्थंकर को मोक्ष प्राप्त हुआ) की कलाकृति को आकर्षक तरीके से उकेरा गया है। मंदिर का फर्श सफेद संगमरमर से बना है। वास्तु और शिल्प का नायाब उदाहरण यह मंदिर शांतिपूर्ण वातावरण में कांच के जटिल काम और रंगीन चित्रों को प्रदर्शित करता है। कांच के टुकड़ों को तराश कर की गई मनमोहक चित्रकारी देखने वाली है। इसे श्री धर्मनाथ भगवान का कांच का जिनालय भी कहा जाता है। कांच और मीनाकारी की रंगबिरंगी कला का यह अद्भुत नमूना हर किसी के लिए दर्शनीय है। दीवारों पर तीर्थ स्थलों, योग के आसनों आदि का चित्रण किया गया है।

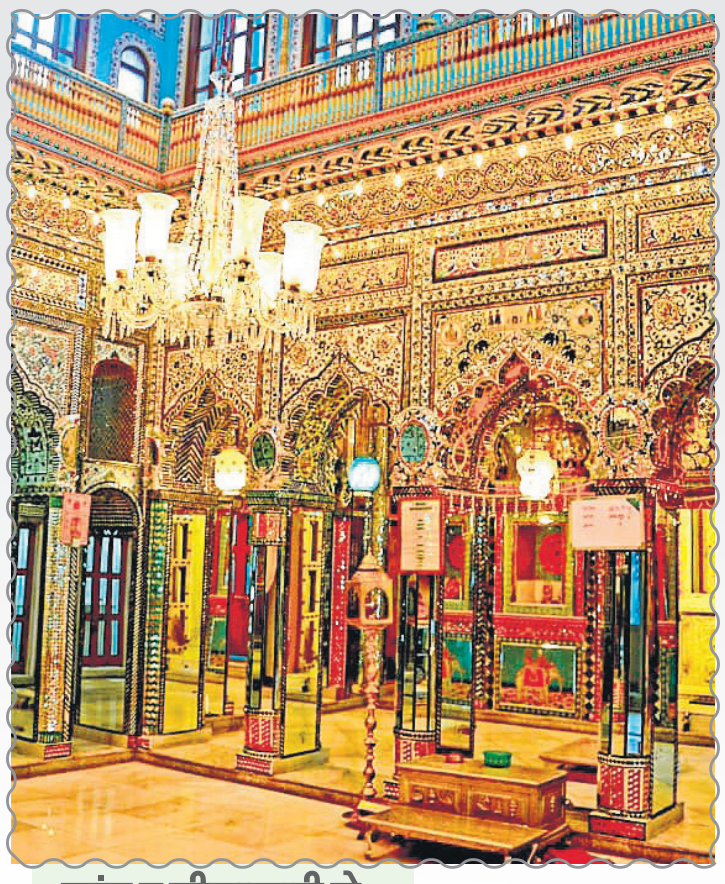

कांच व मीनाकारी से अलंकृत आभूषणों से की गई है सजावट

इस मंदिर का निर्माण प्राचीन और पारंपरिक संरचनात्मक शैली में किया गया है। मंदिर की दीवारों पर कांच और मीनाकारी से शानदार ढंग से अलंकृत व जटिल पैटर्न वाले आभूषण जड़े हुए हैं। मंदिर की पूरी संरचना कांच और मीनाकारी से निर्मित है, जो पारंपरिक स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर की दीवारें और छत उत्कृष्ट कलात्मक डिजाइनों में काटे गए दर्पणों से सुसज्जित हैं। दीवारों पर भित्ति चित्र रंगीन कांच से बने हैं। मंदिर में अलंकृत दर्पण कार्य के साथ भव्य शैली के मेहराब हैं।

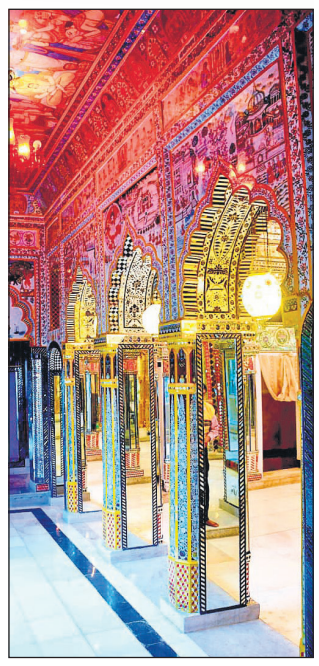

मंदिर प्रांगण में स्थित खूबसूरत बगीचा, संगमरमर की कृतियां

जैन कांच मंदिर जैन धर्मावलंबियों के लिए समर्पित है। इस मंदिर को देखने और दर्शन करने भगवान महावीर के अनुयायियों के साथ शेष 23 जैन तीर्थंकरों के अनुयायी बड़ी संख्या में आते हैं। मंदिर के सामने जहां एक धर्मशाला है, वहीं मंदिर के प्रांगण में खूबसूरत बगीचा पूरे स्थल को रमणीक बनाता है। बगीचे में संगमरमर को तराश कर कई कलाकृतियां स्थापित की गई हैं।

सुरमा बरेली वाला आंखों का है रखवाला

बरेली में सुरमा बनाने से लेकर बिकने की शुरूआत हाशमी परिवार ने की थी 'बरेली का सुरमा' किसी पहचान का मोहताज नहीं है। यह इस शहर का रिवाज और संस्कृति जैसा है, इसके चलते जो कोई बरेली आया, सुरमा साथ लेकर जरूर गया। यहां हाशमी परिवार से शुरू हुआ सुरमा बनाने का कारोबार अब पांचवी पीढ़ी संभाल रही है। बरेली में सुरमा लोगों को रेलवे स्टेशनों से लेकर बस अड्डों, बाजारों, गली-मोहल्लों की दुकानों तक पर आसानी से मिल जाता है। बड़ा बाजार, किला रोड, कुतुबखाना, पुराना शहर, सेटेलाइट हर कहीं सुरमा बिकता है। आला हजरत के उर्स में आने वाले देश-विदेश के जायरीन भी बरेली की निशानी के तौर पर सुरमा खरीदकर ले जाते हैं।-

- आसिफ अंसारी, बरेली

सुरमे का कारोबार

बरेली के सुरमा को ब्रांड बनाने वाले एम हसीन हाशमी का चार साल पहले निधन हो चुका है। एम हसीन हाशमी बरेली में सुरमा कारोबार को आगे बढ़ाने वाले हाशमी परिवार की चौथी पीढ़ी के सदस्य थे। उन्होंने 1971 में कारोबार संभालने के बाद इसे देश-विदेश तक शोहरत दिलाई। अब उनके बेटे हाजी शावेज हाशमी सुरमा का काम संभाल रहे हैं। बड़ा बाजार में सुरमा बेचने वाले व्यापारी मोहम्मद शमा हाशमी ने बताया कि सुरमा लगाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है और सफाई भी हो जाती है। उनके पास दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरू समेत देश के कई हिस्सों से सुरमा की मांग आती है।

मीता! पंचलैट वालेः गोधन और मुनरी की प्रेमकथा

असमानता, विपन्नता और कमतर होने से उपजे एहसास को कम करने का सफल प्रयास जब अपने चरम पर जाता है तब उपजती है कहानी 'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखी गई कालजयी कहानी को नई नजर से मंच पर लाने का प्रयास निर्देशक लव तोमर और उनकी टीम ने किया है। नाटक का नाम– "मीता! पंचलैट वाले"। तीसरी कसम कहानी से महुआ घटवारन का प्रसंग भी कथा का हिस्सा है। यह अपने होने का सिंबॉलिज्म गोधन और मुनरी की प्रेमकथा में खोजता है, लेकिन सफल प्रेम के संदर्भ में। रचनात्मक स्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए नाटक में कुछ घटनाएं, चरित्र और भावों का प्रयोग किया गया है, जो मूल कहानियों का हिस्सा नहीं हैं।– *फीचर डेस्क बरेली*

फणीश्वर नाथ रेणु की एक कहानी है। इस आंचलिक कहानी का का नाम है पंचलाइट। इसका समय-काल पुराना है। उन दिनों का जब गैसबत्ती या पंचलाइट को रात में रोशनी के लिए जलाया जाता था। उसे जलाना भी कमाल था। इसी को आधार बनाकर रेणु ने एक प्रेम कथा की रचना की है। उन्हीं की एक कहानी है तीसरी कसम। इन दोनों रचनाओं को मिलाकर एक नाटक रचा गया। नाम है मीता पंचलैट। अस्तिता फाउंडेशन, ड्रामा ड्रॉप आउट्स और वेग्माइन सिटी मॉल ने बरेली नाट्य महोत्सव के तहत प्रभावे ऑडिटोरियम, अर्बन हाट, बरेली में मंचन किया। नाटक में फणीरेश्वर नाथ रेणु जी की दो कहानियों पंचलाइट और तीसरी कसम को मिलाकर एक नया सिंबोलिक खोजकर नाटक को गढ़ा गया। इसमें पंचलाइट जो समस्या है वह तो है ही। साथ ही उसमें गोधन और मुनरी की प्रेम कहानी को भी स्थापित किया है। नाटक के मंचन में एक समय पंचलाइट का अभाव और प्रेम कहानी एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

फणीरेश्वर नाथ रेणु की कहानी तीसरी कसम की महुआ घटवारन का प्रसंग भी जोड़ा गया। गोधन और मुनरी की प्रेम कहानी दोहराई गई है। प्यारे लाल कहानी चल रही होती है पंचलाइट के अभाव की। यहां पर इनका प्रेम पूरा होता है, जिसका कारण पंचलाइट बनती है। गांव व टोले वालों की इज्जत बच जाती है। कहानी के अनुसार गोधन गांव में रहता है, लेकिन गोधन को पंचायत से बाहर रखा और अंत में वही आगे पंचलाइट जलाता है। नाटक में गोधन को शहर भेज दिया जाता है। जहां वह अच्छे से अपना व्यापार जमा लेता है। फिर वहां से साल-डेढ़ साल बाद आकर गोधन गांव के मेले में ही पंचलाइट की दुकान खोलता है, जो कि गांव व मेले की सबसे बड़ी पंचलाइट की दुकान होती है।

पंचलाइट की आंचलिक कहानी

पंचलाइट रेणु जी की आंचलिक कहानी है। कहानी में बिहार के एक पिछड़े गांव के परिवेश का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया है। रामनवमी के मेले में महतो टोली के पंचों ने एक पेट्रोमैक्स खरीदा, जिसको गांव वाले पंचलाइट कहकर पुकारते थे। पंचलाइट खरीदने के बाद दस रुपये बचे थे, जिससे पूजा की सामग्री भी खरीदी गई। उसी में कीर्तन का आयोजन किया गया उस टोली के सभी लोग पंचलाइट देखने के लिए आ गए, लेकिन प्रश्न उठा कि इसको जलाएगा कौन ? क्योंकि खरीदने के पहले यह बात तो दिमाग में आए ही नहीं लोगों ने यह निर्णय लिया की दूसरी टोली के लोगों से नहीं जलाया जाएगा भले ही वही पड़ा रहे। आज किसी ने अपने घर ढिबरी भी नहीं जलाई थी। पंचलाइट न जलने से सभी के चेहरे उतर गए वही राजपूत टोली के लोग कहने लगे सभी लोग कान पकड़कर दस बार उठे-बैठे पंचलैट जल जाएगा, लेकिन ऐसा मजाक को भी धैर्यपूर्वक सहना पड़ा। वहीं पर गुलरी काकी की बेटी मुनरी बैठी थी। वह जानती थी कि गोधन पंचलाइट जलाना जानता है, लेकिन पंचायत ने गोधन का हुक्का पानी बंद कर रखा था, क्योंकि वह सलीमा का गाना गलियों में गाता रहता था और लड़कियों को छेड़ता रहता था। मुनारी गोधन से प्रेम करती थी। इसलिए वह अपने न कहकर अपनी सहेली कनेली को बताई। कनेली सरदार तक यह बात पहुंचा दी कि गोधन पंचलाइट जलाना जानता है, लेकिन सभी लोग सोच में पड़ गए कि गोधन को बुलाया जाए कि नहीं बुलाया जाए। अंत में लोगों ने निर्णय लिया कि उसे बुलाया जाए। सरदार ने छड़ीदार को भेजा, लेकिन उसने आने से मनाकर दिया। अंत में गुलरी काकी झोपड़ी में गई और उसे मनाकर ले आई। गोधन ने पंचलाइट में तेल भरा और पूछा स्प्रिट कहां है, सभी लोग उदास हो गए लेकिन गोधन होशियारी से गाड़ी की तेल की सहायता से पंचलाइट जला देता है। पंचलाइट के जलने से लोगों के मन में प्रसन्नता आ गई। मुनरी ने हसरत की निगाहों से उसे देखा दोनों की नजरें चार हो गई। गुलरी काकी ने शाम को उसे खाने पर बुलाया पंच भी अति उत्साहित होकर गोधन को कह देते हैं – 'तुम्हारा सात खून माफ, खूब गाओ सलीमा का गाना'।